पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.11.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-12 मार्गशीर्ष-2082 दयानन्दाब्द 201 16 नवम्बर से 30 नवम्बर 2025 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.11.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य नेता अनिल आर्य का जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

अनिल आर्य का व्यक्तित्व सबको आकर्षित करता है –विपिन आहूजा

अनिल आर्य की कर्मठता अविरल निरंतर है –ओम सपरा

शुक्रवार 14 नवम्बर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर आर्य समाज अशोक विहार फेज 1, दिल्ली में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य नेता ओम सपरा ने (पूर्व मेट्रो पोलेटिन मैजिस्ट्रेट) ने की। समाजसेवी विपिन आहूजा आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने कहा कि समाजसेवा और परहित की भावना के साथ आप कार्य कर रहे हैं आपके सद प्रयासों को नमन है। आपकी कार्य शैली, कर्मठता व निरंतरता बेमिसाल है। पूर्व मेट्रो पोलटन मैजिस्ट्रेट ओम सपरा ने कहा कि हमने आपसे बहुत कुछ सीखा है आप सदैव आशावादी व ऊर्जावान रहते हैं। आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि अनिल आर्य कभी विश्राम नहीं करते अपितु सबको व्यस्त रखते हैं। आपका व्यक्तित्व सबको अपना बना लेता है। पूर्व पार्षद मंजू खण्डेलवाल ने शुभकामनाये देते हुए सदैव स्वस्थ रहने की कामना की। उत्तर प्रदेश प्रान्तीय अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा है कि आपकी कर्मठता लोगो को जोड़ने की कला अदभुत है। जिस कार्य को संभालते है उसे सफल करते हैं। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सतीश शास्त्री ने यज्ञ करवाया व सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा लेने का आह्वान किया। आर्य गायक वसुधा वसु , गौरव आर्य, हीरा प्रसाद शास्त्री, प्रवीन आर्या पिंकी, प्रतिभा सपरा , राम कुमार पूंजानी ने अपने गीतों से धूम मचा दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन दुर्गेश आर्य ने किया। प्रमुख रूप से सुनीता बुगा, धर्मपाल आर्य, प्रमोद योगाचार्य, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, सुदेश भगत, राधा भारद्वाज दशरथ भारद्वाज, तिलक राज संदूजा, राजेन्द्र बेदी यूएसए, विजय भाटिया, गोपाल आर्य नेत्र पाल आर्य, वेद प्रकाश आर्य, प्रेम सचदेवा, कृष्णा पाहुजा, सत्यपाल गांधी, बृज मोहन गर्ग, समीर सहगल, राज रानी अग्रवाल, आशा भटनागर आदि उपस्थित थे।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

मेरी श्रीलंका यात्रा

- देवेंद्र कुमार भगत (राष्ट्रीय मंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद)

पहला पड़ाव–कैंडी की शांति और संस्कृति

यात्रा का आरंभ और भव्य स्वागत– हमारी श्रीलंका यात्रा का आरंभ ही उत्साह और नई उम्मीदों से भरा था। भारत के हवाई अड्डे पर यात्रा की शुरुआत करते हुए जो रोमांच था, वह श्रीलंका पहुँचते ही वहाँ की शांत और हरी–भरी आबोहवा में बदल गया। हमारा पहला गंतव्य था – श्रीलंका के मध्य में स्थित सांस्कृतिक राजधानी कैंडी (Kandy)। कैंडी की ओर जाते हुए, चारों ओर की हरियाली मन को मोह रही थी। हमने एक बेहद खूबसूरत होटल में चेक–इन किया, जहाँ रात का नज़ारा किसी स्वप्नलोक से कम नहीं था। चमचमाता नीला पूल और दो मंजिला इमारत पर फैली सुनहरी रोशनी, दिनभर की थकान को एक पल में दूर कर रही थी। यहाँ की शांति और सुंदरता ने हमें तुरंत ही इस से प्यार करवा दिया।

'आयुबोवन'– स्वागत की मधुर ध्वनि–अगले दिन, हम कैंडी के प्रमुख स्थानों को देखने के लिए निकले। सबसे पहले हमें 'आयुबोवन' (Ayubowan) का एक बड़ा सा लकड़ी का बोर्ड मिला। सिंहली भाषा में यह शब्द दीर्घायु हों और शपका स्वागत है का भाव लिए हुए है। हरे–भरे पेड़ों के बीच यह पारंपरिक स्वागत चिह्न देखकर ऐसा लगा मानो प्रकृति हमें खुले दिल से गले लगा रही है। वहाँ मौजूद लोगों की विनम्रता भी इस स्वागत को और मधुर बना रही थी।

महान बुद्ध प्रतिमा और दिव्य शांति– कैंडी में सबसे पहले हमने एक ऊँची पहाड़ी पर स्थापित विशाल सफेद बुद्ध प्रतिमा के दर्शन किए। यह प्रतिमा इतनी भव्य और शांत थी कि इसे देखते ही मन में एक अजीब सी शांति का अनुभव हुआ। आसमान के नीले रंग के नीचे, सफ़ेद रंग की यह बुद्ध प्रतिमा करुणा और ध्यान का प्रतीक लग रही थी। हमने उस शांत वातावरण में कुछ देर बैठकर प्रकृति और आध्यात्मिकता के तालमेल को महसूस किया।

महावेली नदी का मनमोहक किनारा– हमारा अगला अनुभव और भी शांतिदायक थाकृमहावेली नदी (Mahaweli River) के किनारे का शांत सौंदर्य। नदी का पानी बेहद शांत और आईने जैसा था, जिसमें किनारों पर लगे हरे–भरे पेड़ों का प्रतिबिंब साफ झलक रहा था। सुबह की हल्की धूप और पक्षियों की चहचाहट के बीच, नदी के किनारे नाव का खड़ा होना, किसी चित्रकार की उत्कृष्ट कलाकृति जैसा लग रहा था। इस स्थान की प्राकृतिक सुंदरता ने हमें शहरी जीवन की भागदौड़ से दूर एक गहरी शांति का अनुभव कराया। यहाँ बोटिंग करने का विचार ही मन को सुकून दे रहा था।

सांस्कृतिक केंद्र और कैन्डियन नृत्य– कैंडी सिर्फ प्राकृतिक सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी समृद्ध संस्कृति के लिए भी प्रसिद्ध हैं, हमने प्रसिद्ध दांत का मंदिर (Temple of the Sacred Tooth Relic) के बाहर से दिखने वाली पारंपरिक सफेद दीवारें देखीं, जो कैन्डियन वास्तुकला की पहचान हैं। शाम को, हमें कैन्डियन संस्कृति को करीब से जानने का मौका मिला। हमने पारंपरिक कैन्डियन नृत्यों का प्रदर्शन देखा। नर्तकों की रंगीन वेशभूषा, ढोल की ताल और उनके हाथों में छतरी या भाले जैसे पारंपरिक उपकरण लिए हुए उनका प्रदर्शन ऊर्जा और गरिमा से भरपूर था। यह प्रदर्शन श्रीलंका की पुरानी परंपराओं और गौरवशाली इतिहास की एक झलक थी, जिसने हमारी यात्रा को एक सांस्कृतिक गहराई दी। कैंडी की यह यात्रा अध्यात्म, इतिहास और प्रकृति का एक सुंदर संगम थी, जिसने हमारी श्रीलंका यात्रा को एक यादगार शुरुआत दी।

दूसरा पड़ाव – नुवारा एलिया की ठंडक और हरियाली– कैंडी की सांस्कृतिक ऊष्मा से निकलकर हम श्रीलंका के लिटिल इंग्लैंड कहे जाने वाले नुवारा एलिया पहुँचे। यह शहर अपनी ठंडी आबोहवा, मीलों फैले चाय के बागानों और औपनिवेशिक वास्तुकला के लिए जाना जाता है। पहाड़ों के बीच भव्य निवास नुवारा एलिया पहुँचते ही हमने महसूस किया कि यहाँ की हवा में एक खास ताज़गी और ठंडक है। हमारा निवास, अरालिया ग्रीन सिटी रात की रोशनी में बेहद शानदार लग रहा था। इसकी भव्यता और वास्तुकला, साथ ही रोशनी से सजी बालकनी, ऐसा एहसास दे रही थी मानो हम किसी यूरोपीय हिल स्टेशन पर आ गए हों। एक लंबे और रोमांचक दिन के बाद, ऐसी आरामदायक जगह पर पहुँचना अपने आप में एक सुकून भरा अनुभव था। अगले दिन, हमने सबसे पहले शहर के केंद्र में स्थित ग्रेगरी झील (Gregory Lake) का दौरा किया। चारों ओर हरे–भरे पहाड़ और उन पर हल्की सी धुंध छाई हुई थी। झील का शांत पानी और किनारे पर खड़ी रंग–बिरंगी नावें एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत कर रही थीं ,हमने झील के किनारे चहलकदमी की। ठंडी हवा और शांत वातावरण में परिवार के साथ तस्वीरें लेना और कुछ पल बिताना सचमुच तरोताजा कर देने वाला था। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता ने हमें शांति से रुककर, हर पल का आनंद लेने का मौका दिया।

रामायण मार्ग का आध्यात्मिक सफर– नुवारा एलिया की यात्रा में एक और महत्वपूर्ण पहलू जुड़ा–रामायण मार्ग (Ramayana Trail)। इस क्षेत्र में कई ऐसे स्थल हैं जिनका संबंध हिंदू महाकाव्य रामायण से माना जाता है। सीता अम्मन मंदिर (Sita Amman Temple) हमने सीता अम्मन मंदिर के भव्य प्रवेश द्वार और उसके परिसर में दर्शन किए। हनुमान प्रतिमारू हमने भगवान हनुमान को समर्पित स्थल का भी दौरा किया, जहाँ उनकी एक विशाल, चमकीली प्रतिमा स्थापित है। उनके सीने में राम, सीता और लक्ष्मण की छवि देखकर श्रद्धा और आस्था का भाव जागृत हुआ। मंदिर की सुंदरता नुवारा एलिया के बीचों–बीच स्थित सुंदर, पीले रंग के मंदिरों की शांत वास्तुकला और उनके प्रवेश द्वार पर बनी मूर्तियाँ इस बात का प्रमाण थीं कि कैसे भारतीय और श्रीलंकाई संस्कृति आपस में जुड़ी हुई है। प्रकृति का अद्भुत नज़ारारू नाइन आर्क ब्रिज (Nine Arch Bridge) हमारी यात्रा का सबसे रोमांचक हिस्सा था नाइन आर्क ब्रिज (Nine Arch Bridge) को देखना एला (Ella) के पास स्थित यह ऐतिहासिक पत्थर का पुल हरी–भरी घाटियों के बीचों–बीच खड़ा है। पुल की मेहराबदार (Arched) संरचना और उसके चारों ओर केले, सुपारी और अन्य उष्णकटिबंधीय पेड़ों का घना जंगल किसी भी फोटोग्राफर के लिए स्वर्ग है। पुल के पास खड़े होकर, इस मानव निर्मित चमत्कार को प्रकृति की गोद में देखना एक अविश्वसनीय अनुभव था। नुवारा एलिया ने अपनी प्राकृतिक सुंदरता, खुशनुमा मौसम और आध्यात्मिक महत्व से हमारी यात्रा को एक नया आयाम दिया।

इसके बाद हम श्रीलंका के दक्षिणी और पश्चिमी तट पर स्थित दो प्रमुख पर्यटक स्थल जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाने जाते हैं।

गाले श्रीलंका के दक्षिणी तट पर स्थित एक ऐतिहासिक शहर है, जो मुख्य रूप से अपने गाले किले (Galle Fort) के लिए प्रसिद्ध है। यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (UNESCO World Heritage Site) एक विशाल डच औपनिवेशिक किला है, जिसका निर्माण 17वीं शताब्दी में डचों ने किया था। यह एशिया में यूरोपीय लोगों द्वारा बनाया गया सबसे बड़ा समुद्री किला माना जाता है किले के अंदर संकरी, पथरीली गलियाँ हैं जहाँ आपको पुरानी डच शैली की इमारतें, कैफे, बुटीक स्टोर, संग्रहालय , और सदियों पुराने चर्च देखने को मिलेंगे यहां क्लॉक टॉवर और गाले लाइटहाउस (Galle Lighthouse) प्रमुख आकर्षण हैं। उनावाटुना बीच (Unawatuna Beach) यह गाले के पास स्थित एक खूबसूरत केले के आकार का (banana & shaped) समुद्र तट है, जो अपने सुनहरी रेत और शांत पानी के लिए प्रसिद्ध है। यह पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। गाले क्रिकेट स्टेडियम यह एक विश्व प्रसिद्ध क्रिकेट स्टेडियम है जो किले के ठीक बगल में स्थित है, और इसका दृश्य काफी मनमोहक है। गाले शहर में सिंहली संस्कृति पर पुर्तगाली, डच, और अंग्रेजी संस्कृतियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो इसे एक अनूठा सांस्कृतिक मिश्रण प्रदान करता है। इसके बाद हम पहुँचे बेंटोटा जो श्रीलंका के पश्चिमी तट पर स्थित एक सुंदर तटीय शहर है, जो अपने लंबे और बेहद खूबसूरत समुद्र तटों और पानी के खेलों (Water Sports) के लिए जाना जाता है। यह श्रीलंका के सबसे लंबे और खूबसूरत समुद्र तटों में से एक है। यह जेट स्कीइंग, वाटर स्कीइंग, विंडसर्फिंग, और स्नॉर्कलिंग जैसे पानी के खेलों के लिए प्रसिद्ध है ,यह लक्जरी रिसॉर्ट्स और स्पा का केंद्र भी है, जो पर्यटकों को आराम और विलासिता का अनुभव प्रदान करते हैं। मादु नदी मुहाना (Madu River Estuary) यह बेंटोटा के पास एक प्रमुख प्राकृतिक आकर्षण है, जहाँ पर्यटक बोट सफारी का आनंद ले सकते हैं।इस सफारी के दौरान, आप मैंग्रोव जंगलों और छोटे द्वीपों को देख सकते हैं, साथ ही वन्यजीवों (जैसे मगरमच्छ और बंदर) को भी देख सकते हैं। अंबालांगोड़ा (Ambalangoda) यह बेंटोटा से थोड़ी दूरी पर स्थित एक गाँव है, जो अपने पारंपरिक मुखौटा बनाने की कला (Mask Making Culture) के लिए जाना जाता है। यहां मास्क संग्रहालय भी स्थित है। समुद्री कछुआ संरक्षण केंद्र (Sea Turtle Hatchery) बेंटोटा और उसके आसपास के क्षेत्रों में कई समुद्री कछुआ संरक्षण केंद्र हैं, जहाँ आप लुप्तप्राय समुद्री कछुओं को बचाने के स्थानीय प्रयासों के बारे में जान सकते हैं।

गाले और बेंटोटा दोनों ही श्रीलंका के सबसे पसंदीदा पर्यटन स्थलों में से हैं, जो इतिहास, संस्कृति और समुद्र तट की मस्ती का शानदार मिश्रण पेश करते हैं

अंतिम पड़ाव कोलंबो का शहरी और तटीय मिश्रण– कोलंबो श्रीलंका की व्यावसायिक राजधानी है, जहाँ आधुनिक शहर की हलचल, ऐतिहासिक स्थल और समुद्र तट का किनारा एक साथ मिलते हैं। कोलंबो की पहचान उसकी आधुनिकता और खरीदारी के शानदार अवसरों से भी है।कोलंबो की सांस्कृतिक और धार्मिक झलक का भी पता चलता है जो श्रीलंका की बौद्ध विरासत का प्रतीक है। कोलंबो में कई महत्वपूर्ण बौद्ध मंदिर हैं। कोलंबो का यह पड़ाव श्रीलंका यात्रा का एक आदर्श समापन रहा, जहाँ गाले के इतिहास और बेंटोटा के प्राकृतिक सौंदर्य के बाद श्रीलंका की आधुनिक पहचान और सभ्यता का अनुभव किया। यही से हमने अपने देश भारत के लिए श्री लंका से विदा ली ,यह यात्रा वास्तव में एक विविध और यादगार अनुभव रही। हम आशा कर रहे है की केंद्रीय आर्य युवक परिषद की तरफ़ से हम सभी आर्य जन भी श्रीलंका की यात्रा का ग्रुप टूर बनाए जिसका खर्च अनुमानित 65000 –70000 तक सभी व्यय के साथ आयेगा।

मनुष्य को सुख ईश्वर की भक्ति व सत्कर्मों से ही मिलता है

— मनमोहन कुमार आर्य

हमें जो सुख व दुःख की अनुभूति होती है वह शरीर व इन्द्रियों के द्वारा हमारी आत्मा को होती है। आत्मा चेतन पदार्थ होने से ही सुख व दुःख की अनुभूति करता है। प्रकृति व सृष्टि जड़ सत्तायें हैं। इनको किसी प्रकार की अनुभूतियां वा सुख व दुःख नहीं होते। आत्मा से इतर परमात्मा की सत्ता है। परमात्मा सत्य, चेतन एवं आनन्दस्वरूप है। परमात्मा अनादि, नित्य एवं सर्वज्ञ भी है। इसके विपरीत हमारी आत्मा सत्य, चेतन, अनादि व नित्य होने सहित अल्पज्ञ, एकदेशी व ससीम सत्ता है। सुख का आधार सृष्टिक्रम व वेदों के अनुकूल ज्ञान व उसके अनुरूप कर्म भी होते हैं। परमात्मा सर्वज्ञ अर्थात् सर्वज्ञानमय होने सहित शरीर से रहित होने के कारण सभी प्रकार के सुख व दुःखों से मुक्त है। मनुष्य को शरीर में रहकर शरीर द्वारा जो सुख व दुःख होते हैं वैसे परमात्मा में नहीं होते। वेदों में ईश्वर को नस, नाड़ी तथा शरीर आदि के बन्धनों से रहित अजन्मा अर्थात् कभी जन्म न लेने वाला बताया गया है। वेद ईश्वर का ही दिया हुआ ज्ञान है। इस कारण वेदों से ईश्वर सहित सभी पदार्थों का यथार्थ, निर्भ्रान्त व सत्य–सत्य ज्ञान प्राप्त होता है। सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ एवं शरीर रहित होने से ईश्वर सब सुखों, ज्ञान तथा आनन्द का भण्डार है। हमें ज्ञान प्राप्ति सहित सुखों की प्राप्ति के लिये भी ईश्वर की शरण को प्राप्त होना होता है। ईश्वर को प्राप्त होकर हम उसकी शिक्षा के अनुसार धर्म पालन करते हुए ज्ञान व सुखों को प्राप्त होते हैं। ज्ञान व सुख प्राप्ति को ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य कहा जा सकता है। ज्ञान से ही हम दुःखों सहित आवागमन के दुःखों से मुक्त होकर पूर्ण परमात्मा को प्राप्त होकर ईश्वर के परमानन्दस्वरूप में स्थित होकर आनन्द का भोग करते हैं। ज्ञान व ज्ञानानुरूप कर्मों से मनुष्य को मुक्ति व मोक्ष प्राप्त होता है जो मनुष्य को सर्वोत्तम सुख व सभी प्रकार के दुःखों से सर्वथा रहित आनन्द को प्राप्त कराता है। इसी बात को तर्क एवं युक्ति से दर्शन आदि ग्रन्थों में हमारे तत्वेत्ता विद्वान ऋषियों ने प्रामाणित व सिद्ध किया है। अतः सुख के अभिलाषी सभी मनुष्यों को जन्म व मरण के बन्धन व दुःखों से मुक्त होने के लिये स्वाध्याय सहित ईश्वर की भक्ति व उपासना करनी चाहिये। यही मनुष्य जीवन की सफलता सहित उन्नति व सुख के आधार हैं। इसको गहनता से जानने के लिये हमें सत्यार्थप्रकाश सहित दर्शन, उपनिषद व वेद आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। वेदों का अध्ययन करते हुए यह ध्यान रखें कि वेदभाष्य ऋषि दयानन्द व आर्य विद्वानों का ही पढ़े जिनमें सत्य वेदार्थ प्राप्त होता है।

ईश्वर की भक्ति व उपासना करने से मनुष्य को सुख मिलता है। अतः इस कारण तो भक्ति करनी ही चाहिये। इसके अतिरिक्त हमें ईश्वर के अनादि काल से हम पर जो उपकार हैं उसका भी हमें ध्यान व चिन्तन करना चाहिये। हमें यह मनुष्य जन्म परमात्मा ने ही दिया है। इस सृष्टि को भी परमात्मा ने हम जैसे जीवों के लिए व उन्हें सुख प्रदान करने के लिये बनाया है। यदि परमात्मा सृष्टि बनाकर हमें सुख देने वाले अन्नादि पदार्थ न बनाता और हमें जन्म न देता तो हमें सुख प्राप्त न होते। ईश्वर ने हम पर यह उपकार केवल इसी जन्म में नहीं किया है अपितु वह ऐसे उपकार इससे पूर्व हमारे पूर्व हुए अनन्त जन्मों से करता आ रहा है। आगे भी करेगा। हमारा शरीर कितना मूल्यवान है उसका ज्ञान तब होता है जब हमारी ही किसी अज्ञानता के कारण किसी अंग में दोष आने पर हम चिकित्सकों के पास जाते हैं और अपना समस्त धन देकर भी उसे पूर्ण स्वस्थ करने में सफल नहीं होते। हमारे इस शरीर का हम मूल्य निश्चित नहीं कर सकते। किसी मनुष्य को एक आंख, गुर्दा या लीवर ट्रांसप्लान्ट वा स्थापित कराना हो तो वह लाखों रुपये में भी सरलता से सम्भव नहीं होता और यदि होता भी है तो इसकी क्षमता मूल अंग के समान हितकारी व सुखदायक नहीं होती। अतः ईश्वर के उपकारों का चिन्तन करके हमें उसकी स्तुति के स्तोत्र व गीत गाने चाहिये। वेदों में ऐसे मन्त्र विद्यमान हैं जिनसे जो उत्तम स्तुति होती है वह अन्यथा नहीं हो पाती। इसके लिये हम यजुर्वेद का एक मन्त्र 30.3 प्रस्तुत कर रहे हैं। मन्त्र हैः

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रन्तन्न आसुव।।

इस मन्त्र का ऋषि दयानन्द जी का किया हुआ अर्थ है कि हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको अर्थात् स्तोता को प्राप्त कीजिए। इस प्रकार के सहस्रों स्तुतिवचन व प्राथनायें हमें वेदों से प्राप्त होती हैं। ऐसी स्तुतियां व प्रार्थनायें संसार में मनुष्यकृत ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होती हैं। हमें सुख व ज्ञान की प्राप्ति सहित भौतिक पदार्थों के लिये भी ईश्वर के शरणागत होना चाहिये और ईश्वर की स्तुति करने सहित पुरुषार्थ से इन सभी को प्राप्त करना चाहिये।

सुखों की प्राप्ति का एक साधन यम व नियमों का पालन भी होता है। यम व नियम योग दर्शन में अष्टांग योग के प्रथम व दूसरे सोपान हैं। इनके पालन से ही योग में प्रवेश किया जा सकता है। जो मनुष्य यम व नियमों का पालन नहीं करते वह योगी कदापि नहीं हो सकते। यम अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह को कहते हैं। नियम शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान को कहते हैं। इनका पालन करने से भी मनुष्य स्वस्थ एवं सुखी होते व रहते हैं। ऐसा करते हुए सत्याचरण, ब्रह्मचर्य पालन, ईश्वर प्रणिधान, तप तथा स्वाध्याय आदि से मनुष्य ज्ञान व सुखों को प्राप्त होते हैं। योग के आठ अंगों का पालन करने से मनुष्य को स्वास्थ्य, सुख व ज्ञान तथा सम्पन्नता आदि सभी आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति होती है। आज देश व विश्व में लोग योग की ओर आकर्षित हैं तथा सभी आसनों व प्राणायामों सहित ईश्वर का ध्यान भी करते हैं। इससे सभी को लाभ प्राप्त हो रहे हैं। जिस प्रकार से योग वैश्विक आवश्यकता एवं लाभकारी वस्तु बन गया है उसी प्रकार से वेद व वैदिक ईश्वर भक्ति भी वैश्विक आवश्यकता है। लोगों को इसको समझना व इसका आचरण करना चाहिये। इससे सुखों व ज्ञान में वृद्धि होने से सबको मानसिक शान्ति आदि का लाभ हो सकता है।

मनुष्यों को अपने माता, पिता, आचार्यों की शिक्षाओं सहित वेद व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के स्वाध्याय से ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानना चाहिये। ईश्वर व आत्मा को जानकर सत्याचरण करते हुए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना व भक्ति करनी चाहिये। ऐसा करने से आत्मा ज्ञान से युक्त होकर निश्चय ही सुख का लाभ करेगा। हमने ऋषि दयानन्द सहित अनेक सद्धर्म पालक मनुष्यों के जीवन चरित पढ़े हैं। इन सबके जीवन में हमें सुख व शान्ति के विशेष रुप से दर्शन होते हैं। अनेक विपरीत परिस्थितियों में भी इन्होंने अपने धैर्य व मन की शान्ति को बनाये रखा। इन्हें जीवन में जो प्राप्त हुआ उससे यह सदैव सन्तुष्ट रहे। इन्होंने अपने जीवन को तो यशस्वी बनाया ही दूसरों को प्रेरणा कर उन्हें भी उन्नत व महान बनने की शिक्षा दी। इस दृष्टि को प्राप्त होकर सुख एवं यश लाभ प्राप्ति के लिए हमें ऋषि दयानन्द का जीवन चरित पढ़ना चाहिये। उनके जीवन में हमें ईश्वर भक्ति, ज्ञान व पुरुषार्थ तथा देश व समाज हित के कार्यों की पराकाष्ठा सहित निर्भीकता देखने को मिलती है। उन्होंने अपने जीवन

(शेष पृष्ठ 4 पर)

आर्य समाज मालवीय नगर का उत्सव सम्पन्न

रविवार 9 नवम्बर 2025 आर्य समाज मालवीय नगर दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ. डॉ महेश विद्यालंकार आचार्य प्रेमपाल शास्त्री वीरेंद्र शास्त्री आर्य रवि देव गुप्त के प्रवचन हुए। सर्वश्री मदन वर्मा, एच एन मिथरानी, प्रमोद पाठक, राजेन्द्र आर्य के पुरुषार्थ से कार्यक्रम सफ़ल हुआ। चित्र में अनिल आर्य को आर्य समाज साकेत का निमंत्रण देते बलराज सेजवाल, प्रकाश वीर शास्त्री, देवेन्द्र सैनी आचार्य आरक्षित शास्त्री ने कुशल संचालन किया

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 747वां वेबिनार सम्पन्न

'150वीं सरदार पटेल जयंती' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

निर्भीकता के प्रतीक थे सरदार पटेल –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 31, अक्टूबर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन कर स्मरण किया गया। उल्लेखनीय है कि सरदार पटेल का जन्म गुजरात के नाडियाड में 31 अक्टूबर,1875 को हुआ था। भारत को संगठित करने में आपकी विशेष भूमिका रही। सरदार पटेल को भारत की 565 रियासतों का विलय करके अखण्ड भारत के निर्माण के लिए याद किया जाता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि सरदार पटेल एक निर्भीक व्यक्तित्व के धनी थे और आधुनिक भारत के शिल्पकार थे,वह स्पष्ट एवं निर्भीक वक्ता रहे उनकी निर्णायक क्षमता अदभुत थी। स्वतन्त्रता के बाद उन्हें भारत का उपप्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री बनाया गया। गृहमन्त्री होने के कारण रजवाड़ों के भारत में विलय का विषय उनके पास था। सभी रियासतें स्वेच्छा से भारत में विलीन हो गयीं थी, पर जम्मू–कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद ने टेढ़ा रुख दिखाया। सरदार की प्रेरणा से जूनागढ़ में जन विद्रोह हुआ और वह भारत में मिल गयी। हैदराबाद में आर्य समाज का आन्दोलन व फिर पुलिस कार्यवाही कर उसे भारत में मिला लिया गया। यदि सरदार पटेल न होते तो हिन्दुस्तान का वर्तमान स्वरूप ऐसा न होता, हिन्दुस्तान खण्ड खण्ड में विभाजित होता। रजवाड़ों रियासतों का हिन्दुस्तान में विलय करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आजादी का मतलब समझें और राष्ट्र की एकता अखण्डता की रक्षा का संकल्प लें। देश की वर्तमान विषम परिस्थितियों में सरदार पटेल बहुत याद आते हैं आज पुनः उनकी नीतियों पर चलने की आवश्यकता है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पटेल जी के पद चिन्हों पर चल रहे हैं। राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र भाई ने कहा कि सरदार पटेल गंभीर चिन्तक, बहुआयामी, आदर्शवादी व व्यवहारिक व्यक्तित्व के धनी थे। राष्ट्र के प्रति उनका प्रेम अद्वितीय था। वर्ष 1928 में गुजरात में बारडोली सत्याग्रह हुआ जिसका नेतृत्व वल्लभ भाई पटेल ने किया। उस समय प्रान्तीय सरकार किसानों से भारी लगान वसूल रही थी। सरकार ने लगान में 30 फीसदी वृद्धि कर दी थी। जिसके चलते किसान बेहद परेशान थे। वल्लभ भाई पटेल ने सरकार की मनमानी का कड़ा विरोध किया। बारडोली सत्याग्रह की सफलता के बाद वहां की महिलाओं ने वल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि दी। अगर आजादी के बाद नेहरू की जगह प्रधानमंत्री सरदार पटेल बनते तो आज कश्मीर व अलगावाद की समस्या नहीं होती। उतर प्रदेश के प्रान्तीय अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि सरदार पटेल के विचार से व्यक्ति की अधिक अच्छाई उसके मार्ग में बाधक है, इसलिए अपनी आंखों को क्रोध से लाल होने दीजिए और अन्याय का सामना मजबूत हाथों से कीजिए। निडर होकर अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने में सर्वदा आगे रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने पटेल की जगह नेहरू को प्रधान मंत्री बनवा कर अनर्थ किया। आर्य नेता कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि भारत के राजनीतिक एकीकरण में लौहपुरूष, भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। राष्ट्रीय एकता अखंडता को मजबूत करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगीं।

श्री गुरुनानक देव जी का वैदिक चिन्तन गोष्ठी सम्पन्न

जाति पाती छुआछूत के विरुद्ध शंखनाद किया –आर्य रविदेव गुप्त

सोमवार 10 नवम्बर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'श्री गुरुनानक देव जी का वैदिक चिन्तन' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया ।यह करोना काल से 747वाँ वेबीनार था। वैदिक प्रवक्ता आर्य रविदेव गुप्त ने कहा कि सिख पंथ के संस्थापक गुरु नानक देव जी ने 556 वर्ष पूर्व जन्म लेकर उस समय के समाज में व्याप्त पाखंड, छुआछूत, जातिप्रथा और नारियों की दुर्दशा को समाप्त करने के लिए एक अभूतपूर्व क्रांति की थी। उनका संपूर्ण चिंतन वेदों के मान्यताओं के अनुरूप ही दिखाई देता है। एक ओंकार सतनाम को ही उन्होंने निराकार मानकर अजन्मा, अनंत, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान बताया है। समाज सेवा के लिए लंगर प्रथा और संगत–पंगत की आवश्यकता पर बल देकर सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया को ही व्यवहार में लाने का प्रयास किया। इसी श्रृंखला में आज से 200 वर्ष पूर्व महर्षि दयानंद सरस्वती ने समाज की इन सभी कुरीतियों को दूर करने के लिए जन्म लिया और 150 वर्ष पहले आर्य समाज की स्थापना की। यह दोनों ही संस्थाएं वेदों की मान्यता पर आधारित होने के कारण एक दूसरे के बहुत निकट प्रतीत होती हैं। वेदांत से प्रभावित गुरु नानक देव जी महाराज को गत 5 नवंबर को उनके जन्मदिवस रूपी प्रकाश पर्व पर संपूर्ण आर्य जगत भी उन्हें अपने भावभीनी श्रद्धा सुमन भेंट करता है। मुख्य अतिथि प्रो. जगबीर सिंह (चांसलर पंजाब विश्वविद्यालय) व दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री सरदार गुरमीत सिंह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सरदार हरभजन सिंह, देयोल (संयोजक राष्ट्रीय सिख संगत दिल्ली), ने की। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीन आर्य ने धन्यवाद। गायिका कौशल्या अरोड़ा जनक अरोड़ा कमला हंस शोभा बत्रा आदि ने मधुर भजन सुनाए।

(पृष्ठ 3 का शेष)

में जो कष्ट सहन किये वह आज के मनुष्य कदाचित नहीं कर सकते। उनके जीवन का अनुकरण कर हम भी अपने जीवन को उनके समान उपयोगी व श्रेष्ठ कर्मों से युक्त बना सकते हैं। ऐसा करते हुए हम अनेक बुराईयों से भी बचते हैं और हमारा सामाजिक जीवन विस्तार व उन्नति को प्राप्त होकर देश व समाज के लिये भी उपयोगी बनता है। इस पक्ष पर भी हमें ध्यान देना चाहिये। संसार में सभी मनुष्य सुख चाहते हैं परन्तु उन्हें यह ज्ञात नहीं होता कि सुख का आधार क्या है? ऐसा माना जाता है कि धन कमाने व सम्पत्तियों को अर्जित कर ही मनुष्य सुखी हो सकता है। ऐसा मानना अर्ध सत्य कहा जा सकता है। प्रत्येक भौतिक व इन्द्रिय सुख के साथ दुःख जुड़ा होता है। भौतिक सुख भोग का परिणाम उत्तर काल में दुःखों के रूप में सामने आता है। इसके विपरीत बिना भौतिक सुखों के ईश्वर उपासना तथा सत्कर्मों को करके जो सुख मिलता है, उसका महत्व कहीं अधिक होता है। दशरथनन्दन मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा देवकीनन्दन योगेश्वर कृष्ण ने ईश्वर भक्ति व सत्कर्म ही तो किए थे। इसी कारण से उनका पावन चरित्र आज भी जन–जन में गाया व स्मरण किया जाता है। अतः हमें भी राम व कृष्ण के जीवन से शिक्षा लेकर उनके अनुसार ही वेद व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों से वैदिक ज्ञान को प्राप्त होकर सत्कर्मों को करना है। इसी से हमारा जीवन सुखी व सफल होगा तथा हम मोक्ष मार्ग के पथिक भी बनेंगे जिसे प्राप्त करना सभी मनुष्यों के जीवन का लक्ष्य है।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970